शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक ३१ : नई दिल्ली : ४-१० नवम्बर २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण ५२ तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा आदि श्रमणी ६०, सर्व १४२ जसोल में सानंद चातुर्मासिक प्रवास कर रहे हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। अहिंसा समवसरण में सभी कार्यक्रम व्यवस्थित रूप में चल रहे हैं। चतुर्मास की परिसंपन्नता के पश्चात पूज्य आचार्यप्रवर बाडमेर एवं आसपास के अनेक क्षेत्रों का स्पर्श करेंगे। आगामी १ फरवरी २०१३ को मर्यादा महोत्सव हेतु टापरा पधार जाने की संभावना है।

समझो पापों को-१४

आचार्य महाश्रमण

आर्हत वाङ्मय में पैशुन्य को पाप बताया गया है। जिसका अर्थ चुगली खाना, परोक्ष में दूसरों की बुराई करना, निंदा करना। संस्कृत कोश में आचार्य हेमचन्द्र ने बताया है--**पृष्ठमांसादनं तद्यत् परोक्षे दोषकीर्तनम्**--पीठ का मांस खाना। इसका तात्पर्य है पीठे पीछे किसी की निंदा करना, बुराई करना, चुगली खाना। इस दुर्वृत्ति से हमें बचना चाहिए। कोई बात हो तो उस आदमी को ही बता दें कि तुम्हारी यह गलती हमारे ध्यान में आई है। यदि गलती है तो तुम उस पर ध्यान देना, उसे ठीक कर लेना। यदि तुम्हारी गलती नहीं है, हमारी गलतफहमी है तो हम अपनी धारणा को ठीक कर लें। सामने नहीं कहना, मूल व्यक्ति को नहीं बताना और परोक्ष में निंदा करते रहना, किसी को आपस में भिड़ा देना, किसी के बारे में गलत धारणा बना लेना, यह पापकर्म है। निंदा करना तो बड़ा आसान काम है। लेकिन यह आसान काम इतने पाप कर्मों का बंध करा देता है कि उदय में आने पर उस व्यक्ति के लिए कठिनाई हो जाती है। एक कथा है--

राजा के दरबार में एक ब्राह्मण का आना-जाना था। राजा उसे सम्मान देता और उसकी बात को ध्यान से सुनता। राजपुरोहित के मन में उस ब्राह्मण के प्रति ईर्ष्या पैदा हो गई। एक आशंका उसके मन में समा गई कि कहीं यह ब्राह्मण राजा को प्रभावित कर राजपुरोहित का पद न ले ले। असुरक्षा की भावना ने पुरोहित के मन में हलचल पैदा कर दी। उसने मन ही मन विचार किया जैसे भी हो, इस ब्राह्मण के प्रति राजा के मन में अन्यथा भाव पैदा किया जाए। कुछ ऐसा किया जाए, जिससे राजा के मन में इसके प्रति घृणा उत्पन्न हो जाए। ऐसा सोचकर पुरोहित ने एक षडयंत्र रचा।

एक दिन राजपुरोहित राजदरबार में रोज आने वाले उस ब्राह्मण से मिला और उसके प्रति सद्भावना व्यक्त करते हुए कहा--'भाग्यशाली हो आप कि महाराज की आप पर पूरी कृपा है। दरबार में आपको यथोचित सम्मान मिलता है। लेकिन शुभेच्छु होने के नाते एक परामर्श आपको देना चाहूंगा कि राजाओं के मिजाज का कुछ पता नहीं चलता, कब रुष्ट हो जाएं, कब तुष्ट हो जाएं। कभी-कभी तो मामूली-सी बात पर भी उनका कोपभाजन बनना पड़ जाता है। आप जब भी राजा के निकट हों और उनसे बातचीत का प्रसंग आए, आप खुले मुंह उनसे बात न करें, क्योंकि बातचीत करते समय मुंह से निकला थूक का एक छोटा-सा छींटा भी राजा को रुष्ट कर सकता है। उस समय मुंह पर कोई कपड़ा जरूर बांधें।'

ब्राह्मण ने राजपुरोहित को अपना हितैषी मानते हुए उसके परामर्श को स्वीकार कर लिया। इधर राजपुरोहित राजा के कान भरने की जुगत भिड़ाने लगा। अवसर पाकर उसने राजा से कहा--'इधर कई

दिनों से देख रहा हूं कि एक व्यक्ति जो स्वयं को ब्राह्मण कहता है आपके पास आता है। आपकी निकटता भी उसने प्राप्त कर ली है। लेकिन शायद आप नहीं जानते कि ब्राह्मणत्त्व का उसमें अंश भी नहीं। वह पक्का मद्यपी है। कभी-कभी तो शराब पीकर दरबार में आ जाता है। ऐसे लोगों को मुंह लगाना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं। दरबार की छवि उससे प्रभावित होती है।'

राजा को बहुत आश्चर्य हुआ। कहा--'शराबी तो वह व्यक्ति नहीं लगता, लेकिन आप कह रहे हैं तो पूरी जानकारी के बाद ही कह रहे होंगे। वह मद्यपी है, इसका कोई प्रमाण?'

कुटिल और ईर्ष्यालु राजपुरोहित तो पूरी योजना बनाकर राजा के पास आया था। उसने कहा--'महाराज! प्रमाण यह है कि जब भी उसने शराब पी होगी, वह खुले मुंह आपसे बात नहीं करेगा। उस समय वह अपना मुंह कपड़े से ढक कर बात करेगा।' राजा ने कहा--'यह तो तुमने नई जानकारी दी। मैं शीघ्र ही इसकी सत्यता की जांच करूंगा।'

दूसरे दिन दरबार में वह ब्राह्मण उपस्थित हुआ। राजा के निकट आकर बातचीत करने का प्रसंग आया तो उसने अपने मुंह पर वस्त्र रख लिया। राजा को पुरोहित की बात पर विश्वास हो गया। अब तक उसे सम्मान देते आ रहे राजा के मन में उस ब्राह्मण के प्रति घोर नाराजगी पैदा हो गई। धर्म-कर्म से च्युत इस ब्राह्मण का इतना साहस कि इसने मुझे छलने का प्रयास किया। राजा ने उसे उसी क्षण दण्डित करने का निर्णय कर लिया। ब्राह्मण से कहा--'विप्रजी! बहुत दिनों से दरबार में आ रहे हो, आज मैं आपकी गरीबी हमेशा के लिए दूर कर देता हूं'--इतना कहकर राजा ने अपने हाथ से राजकीय कोषागार के प्रभारी के नाम एक रुक्का लिखा--

रुपया दीज्यो पांच सौ, मत दीज्यो सुल्लाख।
घर में आगो घालनै, काटी दीज्यो नाक।।

राजा ने पत्र लिफाफे में बन्द कर ब्राह्मण को दे दिया। राजपुरोहित दूर से सब कुछ अपनी आंखों से देख रहा था। राजा को रुक्का देते देख उसके मन में आशंका हुई।

ब्राह्मण ने आज अपना भाग्योदय समझा और प्रसन्न मन से राजकीय कोषागार की ओर चल पड़ा। मार्ग में उसे कुटिल राजपुरोहित मिला। पूछने पर ब्राह्मण ने पूरा वृत्तान्त सुनाया और कहा--'महाराज ने आज कृपा की है। राजकोष के प्रभारी के पास यह पत्र देकर भेजा है तो पुरस्कार मिलना ही है।' राजपुरोहित को अपना दांव उल्टा पड़ता दिखाई दिया। कहां तो दंडित कराने की बात सोची थी, यहां तो पुरस्कार मिल रहा है। पुरोहित सहज ही हार मानने वाला नहीं था। उसने फिर चाल चली और कहा 'राजकीय नियमों से अभी शायद अनभिज्ञ हो। यह रुक्का सीधा भण्डारी के पास नहीं जाएगा। पहले इस पर राजकीय मुहर लगेगी, तब इस पर कार्यवाही होगी। इसे लाओ, मैं अभी मुहर लगवा कर लाता हूं।' सरल हृदय ब्राह्मण राजपुरोहित के कपट को समझ नहीं सका और उसे रुक्का दे दिया। रुक्का लेकर राजपुरोहित सीधा कोषागार के प्रभारी के पास गया, उसे रुक्का थमा कर कहा--'राजाज्ञा की तुरंत पालना कर दी जाए।' भण्डारी ने रुक्का पढ़ा, उसमे लिखी पांच सौ रुपये देने की बात तो उसकी समझ में आई, लेकिन नाक काट लेने की बात ने उसे उलझन में डाल दिया। फिर भी आज्ञा तो आज्ञा। प्रभारी का काम आज्ञापालन था। उसने रुक्के में लिखे निर्देश के अनुसार पांच सौ रुपये दे दिए और कटार हाथ में लेकर राजपुरोहित की गरदन पकड़ ली। पुरोहित घबराकर बोला--'भंडारीजी, यह क्या कर रहे हो?' भंडारी ने कहा--'वही कर रहा हूं जो राजा ने रुक्के में लिखा है'--और इतना कहकर भण्डारी ने राजपुरोहित की नाक काट ली। राजपुरोहित को सारी बात समझ में आ गई, लेकिन अब क्या हो सकता था।

राजपुरोहित द्वारा छला गया ब्राह्मण निराश होकर पुनः राजा के पास गया। राजा को उसे नाक सहित सही सलामत देख आश्चर्य हुआ। उसने कहा--'आप मेरा वह रुक्का लेकर भण्डारी के पास नहीं

गए क्या?' ब्राह्मण ने कहा--'वहां पहुंचने से पूर्व ही राजपुरोहितजी ने वह रुक्का मुझसे ले लिया और उसके बाद वे मुझे मिले ही नहीं।' तभी पुरोहितजी नाक पर पट्टी बांधे दरबार में राजा के समक्ष उपस्थित हुए। सारी बात राजा की समझ में आ गई। राजपुरोहित का षडयंत्र उद्घाटित हो गया। उसे अपने किए की सजा मिली और उसका पद उस ब्राह्मण को मिल गया।

जो दूसरों का अहित करता है, मानो वह अपने अहित की पृष्ठभूमि तैयार करता है। बुराई का दुष्परिणाम भोगना पड़ता है। दूसरों का अहित करने की भावना स्वयं अपना बहुत बड़ा नुकसान करा देती है। कर्मों का फल भोगने में देर तो हो सकती है, किन्तु कर्म के साम्राज्य में अन्धेर नहीं है। कर्मों का फल भोगे बिना छुटकारा नहीं।

दुनिया में अच्छे लोगों की कमी नहीं तो बुरे लोगों की भी कमी नहीं है। परदोषदर्शन जिनकी प्रवृत्ति है, स्वभाव है, दूसरों के बनते काम को बिगाड़ने में जिन्हें रस आता है, अच्छे और नेक काम में जिन्हें कोई दिलचस्पी नहीं, दो लोगों में परस्पर अविश्वास पैदा कर उन्हें आपस में भिड़ा देने को जो अपनी बड़ी कामयाबी मानते हैं, वे नहीं जानते कि कितने पापों का वे बंध कर रहे हैं।

किसी दार्शनिक से पूछा गया--'इस दुनिया में सबसे आसान काम क्या है?' दार्शनिक ने नपे-तुले शब्दों में उत्तर दिया--'पीठ पीछे किसी की निंदा, आलोचना करना।' सामने कुछ कहने में संकोच होता है, कुछ विचार कर बोलना पड़ता है, लेकिन सामने वाले की अनुपस्थिति में कई बार आदमी बेलगाम होकर बोल लेता है। पीठ पीछे तो लोग न प्रधानमंत्री को छोड़ते हैं, न राष्ट्रपति को, न किसी बड़े महापुरुष को। किसी की भी निंदा-आलोचना हो जाती है। लोग सामने तो गले मिलते हैं और पीछे से उनकी बुराई करते हैं। आदमी में यह साहस होना चाहिए कि जो कहना है, वह सामने ही कहूंगा, उसी को कहूंगा, जिससे संबंधित बात है, सही बात कहूंगा और हित के लिए कहूंगा। मात्र अपनी प्रवृत्ति और आदत के कारण किसी की निंदा, चुगली करना पृष्ठमांसादन है, पैशुन्य है। इससे व्यक्ति को बचने का प्रयास करना चाहिए।

व्यक्ति आत्मावलोकन करे कि अठारह पापों में से कौन-सा पाप मैंने ज्यादा मात्रा में किया है और उन्हें कम कैसे किया जाए? पाप जितने ही कम होंगे, हमारी आत्मा उतनी ही निर्मल बनेगी। आदमी पवित्र कार्य न कर सके तो कम से कम पापों से तो बचे। कहा गया है--

तुम पुण्य कार्य मत करो भले ही, किन्तु करो मत पाप, पुण्य के फल को पा लोगे।
मत रटो राम का नाम भले ही, किन्तु करो सत्काम, राम के बल को पा लोगे।।

आदमी हंसते-हंसते पाप तो कर लेता है, किन्तु जब उसका विपाक होता है तो आंसू बहाने पर भी उनसे छुटकारा नहीं मिलता है। बाद में रोना-पछताना पड़े, इसकी अपेक्षा यह कहीं ज्यादा ठीक है कि वैसे काम से बचा जाए। इसके लिए संयम का अभ्यास आवश्यक है। संत जन उपदेश देते हैं, उनके प्रति लोगों में आकर्षण भी होता है। मैंने अनुभव किया है कि भारतीय जनमानस में साधु-संतों के प्रति श्रद्धा की भावना है। यह भी एक शुभ संकेत है।

उपदेश जीवन में भले ही कार्य रूप में परिणत न हो सके, किन्तु उपदेश सुनने की भावना भी अच्छी बात है। उपदेश की सौ बातें सुनी जाएंगी तो उसमें से दो-चार बातें जीवन में हृदयंगम भी हो सकती हैं, उतर भी सकती हैं। एक गृहस्थ परिस्थितिवश कभी झूठ भी बोल देता है, धोखा और छल भी कर सकता है। किन्तु उपदेश का श्रवण करने के बाद कई बार उसका मन कुछ-कुछ भीगता है, उसे अपने किए पर अनुताप होता है और भविष्य में वैसे काम न करने का वह इरादा भी कर लेता है। इस प्रकार संत-महात्माओं की वाणी भी व्यक्ति-सुधार में बहुत सहयोगी बनती है।

अगर किसी के मन में यह बात है कि संतों की संगत से, उनके उपदेश से कोई फर्क नहीं पड़ता, उससे कोई लाभ नहीं तो भी एक घंटा, दो घंटा उनके समीप बैठना अच्छी बात है। क्योंकि उतने समय तक तो पापों से बचाव हो सकता है। सत्संग का वह घंटे, दो घंटे का समय निंदा, चुगली, चोरी, छल-कपट और दूसरे पापकारी कृत्यों से व्यक्ति को विरत कर देता है। चौबीस घंटे में दो घंटे का समय भी अगर शुभ योग में बीते तो इसे एक उपलब्धि मानना चाहिए। संत तुलसीदासजी ने दो बातों को दुर्लभ बताते हुए कहा है--

सुत दारा अरु लक्ष्मी, पापी के भी होय।
संतसमागम हरि कथा, तुलसी दुर्लभ दोय।।

पत्नी, पुत्र और पैसे की प्राप्ति तो एक पापी को भी हो सकती है, किन्तु सत्संग और धर्मकथा-श्रवण का अवसर दुर्लभ होता है। सत्संग और धर्मकथा का अवसर जहां, जब भी मिले, उसका लाभ उठाना चाहिए। जीवन में सदुपदेश का थोड़ा-सा अंश भी उतरना शुरू हो गया तो जीवन में सत् परिवर्तन आ सकता है।''

•

परमश्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण जसोल में

विजयादशमी पर दुर्गुणों को जलाएं

२४ अक्टूबर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 'नशामुक्त जसोल' अभियान के अंतर्गत आज प्रातः अम्बेडकर सर्कल पधारे। वहां उपस्थित मेघवाल, दलित आदि समाज के लोगों को पूज्यवर से पावन पाथेय प्राप्त हुआ। आचार्यवर की प्रेरणा से अनेक लोगों ने चिलम, बीड़ी, गुटखा आदि का परित्याग कर नशामुक्त बनने का संकल्प स्वीकार किया।

वीतराग समवसरण में समायोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्य अभयदेवसूरिकृत 'आगम अठुत्तरी' नामक ग्रंथ का लोकार्पण हुआ। प्रस्तुत ग्रंथ का संपादन समणी कुसुमप्रज्ञाजी ने किया है। कार्यक्रम में श्री प्रेमसुमन जैन ने ग्रंथ के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए ग्रंथ पूज्यवर के करकमलों में उपहृत किया। आचार्यप्रवर ने उसे लोकार्पित किया। समणी कुसुमप्रज्ञाजी ने अपनी सफलता का श्रेय पूज्यचरणों में अर्पित करते हुए ग्रंथ के विषय में भावाभिव्यक्ति दी। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक उद्‌बोधन हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'व्यक्ति अपने गुणों के कारण साधु कहलाता है और अवगुणों के कारण असाधु कहलाता है। हम अपने जीवन में अच्छे गुणों को ग्रहण करें और दुर्गुणों को त्यागें। ऐसा करने से जीवन सफल और सुफल बन सकता है।'

पूज्यप्रवर ने कहा--'आज विजयदशमी है। जनोक्ति के अनुसार आज के दिन रावण अवसान को प्राप्त हुआ। जनमानस में रावण के प्रति कहीं अवज्ञा भाव है तो कहीं उसकी पूजा भी होती है। जैन रामायण में रावण के जीवन के अच्छे-बुरे दोनों पक्षों का वर्णन प्राप्त होता है। व्यक्ति यह ध्यान दे कि जीवन में बुराइयां न पनपें और जो बुराइयां जीवन में प्रवेश कर चुकी हैं, उन्हें छोड़ने का प्रयास करना चाहिए। मोहकर्म रूपी रावण व्यक्ति के भीतर विद्यमान है। उसके कारण कितनी-कितनी बुराइयों का जीवन में समावेश हो जाता है। यदि हम उन बुराइयों को कम करने का प्रयास कर सकें तो विजयदशमी मनाना अधिक सार्थक होगा। हम इन्द्रिय व मन पर विजय पाने का प्रयास करें। इन्द्रियां अपने आप में अशुभ नहीं होतीं। किन्तु जब उनके साथ मोह का योग हो जाता है तो ये कर्मबंधन का कारण बन जाती हैं। हम अपने योगों को अशुभ होने से बचाने का प्रयत्न करें।'

'आगम अठुत्तरी' ग्रंथ के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'यह एक छोटा ग्रंथ है, किन्तु छोटे ग्रंथ को पढ़ने से भी अच्छी बातें ज्ञात हो सकती हैं। इस ग्रंथ के अनुवाद और संपादन का कार्य समणी कुसुमप्रज्ञाजी ने किया है। यह जैन वाङ्मय की सेवा है। समणी कुसुमप्रज्ञाजी प्राकृत वाङ्मय के कार्य में वर्षों से लगी हुई हैं। समणश्रेणी के अंतर्गत इस कार्य में इनका नाम अग्रिम पंक्ति में लिया जा सकता है। ये आगे भी इस कार्य में अपनी शक्ति का नियोजन करती रहें। इनका वक्तृत्व अच्छा है और ये गाती भी अच्छा हैं। हम इन्हें ज्यादा लाडनूं में ही रखते हैं, ताकि कार्य गति से हो सके। पाठक 'आगम अठुत्तरी' से लाभान्वित हो सकेंगे।'

विविध कार्यों में समणीवृन्द के योगदान का उल्लेख करते हुए आचार्यप्रवर ने कहा--'समणश्रेणी का विविध क्षेत्रों में प्रवेश है। समणी चारित्रप्रज्ञाजी जैन विश्वभारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय की कुलपति हैं। कितनी-कितनी समणियां अध्यापन कार्य में लगी हुई हैं। भिन्न सामाचारी के दौरान साध्वियों की सेवा में समणियों का विशेष योगदान रहता है। समणियां अपना खूब आध्यात्मिक विकास करती रहें।'

पूज्यप्रवर के प्रवचन के उपरान्त मलनाड क्षेत्र से समागत ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने गीत प्रस्तुत किया। मलनाड क्षेत्रीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री फूलचन्द तातेड़ ने अपने विचार व्यक्त किए।

सम्यक् मूल्यांकन हो मानव जीवन का

२५ अक्टूबर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने आज प्रातः से जसोल के घरों में चरण स्पर्श का क्रम प्रारंभ किया। अपने आराध्य को अपने प्रांगण में पाकर जसोलवासी धन्यता की अनुभूति कर रहे थे। प्रातःकालीन कार्यक्रम के अंतर्गत परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'प्राणी चौरासी लाख जीवन योनियों में परिभ्रमण करते रहते हैं। मनुष्य जन्म को दुर्लभ कहा गया है। जिन्हें यह प्राप्त है, वे मनुष्य जन्म का मूल्यांकन करना सीखें। जो इस जीवन का सम्यक् मूल्यांकन करता है, वह धर्म की दिशा में आगे बढ़ सकता है और अध्यात्म की साधना कर सकता है। मनुष्य जीवन ही ऐसा जीवन है, जहां से साधना के द्वारा कर्म क्षय कर आत्मा मोक्ष को प्राप्त कर सकती है। मनुष्य जीवन में ही धर्म की उत्कृष्ट साधना की जा सकती है। हम अहिंसा की साधना करते हुए कषाय को प्रतनु करने का प्रयास करें।'

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक अभिभाषण हुआ। बीदासर से समागत संघ की ओर से प्रार्थना के क्रम में श्री जंवरीमलजी बैंगानी, श्री भीखमचन्द नाहटा और श्री महावीर दूगड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

बीदासरवासियों की प्रार्थना पर आचार्यवर ने अनुग्रह करते हुए घोषणा की--

- द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव और स्वास्थ्य आदि की अनुकूलता की स्थिति में सुदीर्घ यात्रा के पश्चात थली (बीकानेर संभाग) का प्रथम मर्यादा महोत्सव बीदासर में करने का भाव है।'
- गुरुदेव तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के दौरान बीदासर में दीक्षा समारोह करने का भाव है।

विशाखापत्तनम से समागत संघ की ओर से वहां के श्रावक-श्राविकाओं ने कार्यक्रम में गीत का संगान किया। तुलसी अमृत निकेतन छात्रावास कानोड़ के १२० छात्र पूज्यचरणों में उपस्थित हुए। श्री सवाईलाल पोखरना ने अपने विचार व्यक्त किए तथा रजत जैन ने गीत का संगान किया।

आज प्रातः एस.एन.बोहरा हाईस्कूल के प्रांगण में विजयदशमी के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मुनि मदनकुमारजी का वक्तव्य हुआ।

आत्मालोचन से आत्मोत्थान

२६ अक्टूबर। परम पावन आचार्यप्रवर ने प्रातःकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत अपने पावन प्रवचन में कहा--'प्रतिक्षण अवस्था आगे बढ़ रही है। चालीस-पचास वर्ष की अवस्था के बाद तो जीवन का अवरोहण शुरू हो सकता है। वार्धक्य के कारण शरीर की क्षमता भी प्रभावित हो सकती है। साधु का जीवन तो साधना के लिए समर्पित होना ही चाहिए, गृहस्थ को भी एक अवस्था के बाद निवृत्त होकर अपना अधिकाधिक समय साधना और पवित्र कार्यों में नियोजित करने का प्रयास करना चाहिए। साधु बनना तो सबके लिए कठिन होता है, किन्तु गृहस्थ संन्यासी के रूप में रहने का प्रयत्न करना चाहिए। पदार्थासक्त रहना एक बात होती है, किन्तु आत्मस्थ रहना विशेष बात होती है। मोह-माया से विरत रहने का प्रयास करना चाहिए। परिवार का भरण-पोषण करते हुए भी श्रावक को यह सोचना चाहिए कि यह तो मेरा सांसारिक कर्तव्य है। निश्चयतः मात्र आत्मा ही मेरी है। गार्हस्थ्य में भी आसक्ति से बचने का प्रयत्न करना चाहिए।'

पूज्यप्रवर ने आगे कहा--'व्यक्ति को अपने जीवन के विषय में चिन्तन करना चाहिए कि मैं प्रमाद में न जाऊं, प्रतिक्षण जागरूक रहूं और अपनी आत्मा का उत्थान हो, ऐसा प्रयास करूं। आत्मकल्याण के लिए यदा-कदा चिंतन करते रहना चाहिए। चिन्तन करते-करते कोई स्फुरणा हो सकती है। रात्रि में कभी नींद उड़ जाए तो उस नीरव वातावरण में आत्मनैर्मल्य के विषय में अनुप्रेक्षा करनी चाहिए। गृहस्थ को यह सोचना चाहिए कि वह दिन धन्य होगा, जिस दिन मैं साधु बनूंगा। चिंतन करने से भी आत्मा की पवित्रता वृद्धिंगत हो सकती है। इसलिए शुभचिन्तन और मंगलभावना करनी चाहिए। हम प्रतिक्षण जागरूक रहने का प्रयास करें और आत्मालोचन के द्वारा आत्मोत्थान की दिशा में आगे बढ़ते रहें।'

उपस्थित जनता को प्रेरणा प्रदान करते हुए आचार्यप्रवर ने कहा--'साधु बनने का निश्चय करना सबके लिए संभव नहीं होता, किन्तु कोई साधु बनना चाहे तो पारिवारिकजनों को बाधक नहीं बनना चाहिए। अन्न, पानी, वस्त्र आदि का दान अच्छा है, किन्तु शिष्यभिक्षा बड़ी बात होती है। वह विशिष्ट दान है। यों तो दीक्षा लेना अपने आप में महत्त्वपूर्ण है, किन्तु छोटी अवस्था में संयम ग्रहण करना और भी महत्त्वपूर्ण होता है। हमारे धर्मसंघ में अनेकानेक साधु छोटी अवस्था में दीक्षित हुए हैं। कितनी-कितनी साध्वियां अविवाहित अवस्था में दीक्षित हुई हैं। छोटे मुमुक्षु को दीक्षा की अनुमति प्रदान करना भी विशेष बात होती है। मैं तो यहां तक कहता हूं कि किसी के एक ही संतान हो और वह सौभाग्य से दीक्षा के लिए तैयार हो जाए तो परिजनों को उसकी दीक्षा में सहयोगी बनना चाहिए, ऐसा हमारा उपदेश है। कुछ परिवारों से तीन-तीन व्यक्ति धर्मसंघ में दीक्षित हुए हैं। यह उस परिवार का महादान होता है।'

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक उद्‌बोधन हुआ। पारमार्थिक शिक्षण संस्था में प्रवेश हेतु समुद्यत मुनि हिमांशुकुमारजी के संसारपक्षीय भाई **जवेरीलाल जीरावला** ने मंगलपाठ का श्रवण किया। पूज्यवर ने उसे **मुनि प्रतिक्रमण** सीखने का आदेश प्रदान किया। बेंगलुरु से समागत ज्ञानशाला के छात्र-छात्राओं ने अपनी आकर्षक प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला की संयोजिका नीता गादिया ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। श्री कुशलराज सेठिया ने पूज्यप्रवर से सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार किया।

आज सुप्रसिद्ध टीवी कलाकार और कवि श्री शैलेश लोढ़ा और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती स्वाति लोढ़ा ने आचार्यवर के दर्शन कर पावन संबोध प्राप्त किया। श्री गणपत भंसाली ने श्री लोढ़ा का परिचय प्रस्तुत किया। राजस्थान अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष श्री गोपाराम मेघवाल और जिला परिषद अधिकारी श्री सी. पी. गुप्ता भी आज आचार्यवर के दर्शनार्थ उपस्थित हुए और मार्गदर्शन प्राप्त किया।

महत्त्वपूर्ण है सेवाधर्म

२७ अक्टूबर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर आज प्रातः ओसवाल भवन (नया) के निकट स्थित मेघवाल समाज के स्व. हड़मानमल सोलंकी की स्मृति सभा में पधारे। वहां उपस्थित सैकड़ों लोगों को पूज्यप्रवर का पावन संबोध प्राप्त हुआ। आचार्यवर ने 'जगत सपने री माया रे' गीत का संगान किया। आचार्यवर के आह्वान पर अनेक व्यक्तियों ने नशामुक्त बनने का संकल्प स्वीकार किया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम के दौरान परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'व्यक्ति को अपने जीवन को उस मार्ग पर गतिमान बनाना चाहिए, जो समतल और गंतव्य तक पहुंचाने वाला हो। हिंसा, झूठ, चोरी आदि का मार्ग विषम है और वह भटकाने वाला भी हो सकता है। इसके विपरीत अहिंसा, सत्य, अचौर्य आदि का मार्ग समतल और गंतव्य तक पहुंचाने वाला हो सकता है। साधु जीवन तो बहुत समतल मार्ग है, किन्तु उसमें यह ध्यान देना जरूरी है कि साधु अपनी साधना के प्रति कितना जागरूक है। साधक के जीवन में भी मोह का ऐसा आवरण आ सकता है, जो उसे भटकाने वाला हो। साधक अपने जीवन में कषाय के मंदीकरण का अभ्यास करे तथा निर्धारित आचार के प्रति जागरूक रहे। वह यह चिन्तन करे कि मेरा प्रतिक्षण साधना में व्यतीत हो। मेरे भीतर नाम, ख्याति की भावना न रहे। जीवन का पथ निरापद और निर्बाध रहे।'

पूज्य आचार्यप्रवर ने 'हाजरी' का वाचन करते हुए साधु-साध्वियों को पांच महाव्रतों, पांच समितियों और तीन गुप्तियों तथा संघीय मर्यादाओं की आराधना में सजग रहने का संबोध प्रदान किया। हाजरी के दौरान सेवा के महत्त्व को उजागर करते हुए आचार्यवर ने कहा--'एक साधु सेवा के कार्य में नियोजित है, यदि वह उस कारण ध्यान, स्वाध्याय आदि ज्यादा नहीं कर पाता तो कोई बात नहीं। मेरी दृष्टि में सेवा धर्म अधिक महत्त्वपूर्ण है। सेवा का अवसर उपस्थित होने पर अन्य कार्यों की अपेक्षा उसे प्राथमिकता देनी चाहिए।'

पूज्यवर द्वारा हाजरी वाचन के उपरान्त नवदीक्षित साध्वी विधिप्रभाजी और साध्वी हिमांशुप्रभाजी ने लेखपत्र का उच्चारण किया। आचार्यवर ने साध्वीद्वय को प्रोत्साहनस्वरूप दो-दो कल्याणक बक्सीस किए। तत्पश्चात मुनिवृन्द ने पंक्तिबद्ध और साध्वीवृन्द ने अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र का उच्चारण किया। कार्यक्रम में दिल्ली से समागत ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने शब्दचित्र प्रस्तुत किया। संयोजक श्री रतनलाल जैन ने अपने विचार व्यक्त किए। भट्ठा-मधुबनी-पूर्णिया से समागत संघ की ओर से श्रावक-श्राविकाओं ने प्रार्थना गीत प्रस्तुत किया। साध्वी आरोग्यश्रीजी ने अपनी कर्मभूमि पूर्णिया की ओर से अपने भावोद्गार व्यक्त किए। विराटनगर से समागत संघ की ओर से तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री विजयराज डागा ने भावाभिव्यक्ति दी। टापरा निवासी श्रीमती सुन्दरदेवी पालगोता की तीन दिन की तिविहार संलेखना सहित चार दिन के अनशन की परिसंपन्नता के पश्चात उनके परिजन पूज्यचरणों में उपस्थित हुए। कार्यक्रम में समणी अक्षयप्रज्ञाजी ने अपनी संसारपक्षीया मां के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए। पेटलावद में साध्वी कुन्दनप्रभाजी की प्रेरणा से भरे गए बारहव्रत के संकल्प पत्र तथा हैदराबाद में साध्वी सत्यप्रभाजी की प्रेरणा से भरे गए बारहव्रत, गुरुधारणा एवं नशामुक्ति के संकल्पपत्र पूज्यचरणों में उपहृत किए गए।

महासभा शताब्दी समारोह का आयोजन

२८ अक्टूबर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में २८ अक्टूबर १९१३ को संस्थापित तेरापंथ समाज की प्रथम संस्था जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के शताब्दी वर्ष का शुभारंभ समारोह आयोजित हुआ। सर्वप्रथम सभा के रूप में स्थापित और सन १९४७ में 'महासभा' की अभिधा से मंडित समाज में अपनी व्यापक पहचान बनाने वाली इस महनीय संस्था के शताब्दी समारोह का प्रारंभ सभा

गीत 'हमारे भाग्य बड़े बलवान' गीत से हुआ। तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू, प्रधान न्यासी व शताब्दी वर्ष के संयोजक श्री कमल दूगड़ ने महासभा के गठन की पूर्व भूमिका व कार्यक्रम के संदर्भ में अपने विचार रखे। प्रेक्षा विश्वभारती के अध्यक्ष श्री बाबूलाल सेखानी ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। महासभा के महामंत्री श्री विनोद चोरड़िया ने आभार ज्ञापित किया।

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'किसी संस्था या संगठन के सौ वर्ष पूरे होना अपने आप में गौरवपूर्ण प्रसंग होता है। प्रायः देखा जाता है कि संस्थाओं का जीवन मात्र अपनी स्थापना तक सीमित रहता है या फिर स्थापना के पांच-सात वर्षों के बाद शिथिलता का दौर शुरू हो जाता है। इन सौ वर्षों के प्रलंबकाल में कितने कार्यकर्ता आए। उनमें अनेक विशेषताएं परिलक्षित होती हैं। वे श्रद्धा और चरित्र--दोनों में खरे उतरे। महासभा के वरिष्ठ कार्यकताओं ने त्याग, समर्पण व गुरुदृष्टि की आराधना को प्राथमिकता दी। शताब्दी वर्ष पर कार्यकर्ताओं को सोचना है कि सौ वर्षों के समृद्ध अनुभवों के आधार पर समाज व संस्था के लिए वे क्या कुछ कर सकते हैं? रूढ़िमुक्त व आडंबरमुक्त समाज की परिकल्पना समाज के सामने प्रस्तुत करें और तदनुरूप जागरण का वातावरण निर्मित करें।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'जो अशरण को शरण प्रदान करता है, अस्थिर को स्थिर करता है और जो गतिमत्ता प्रदान करता है, वह धर्म है। धर्म तभी संभव है, जब व्यक्ति उसे आत्मसात् करे। तेरापंथ एक धर्म-सम्प्रदाय है। संप्रदाय और संगठन का अपना महत्त्व होता है। संगठन के सहारे व्यक्ति गति कर सकता है। संप्रदाय भी त्राण देने वाला बन जाता है।'

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा को तेरापंथ धर्मसंघ की प्राचीन संस्था बताते हुए आचार्यवर ने कहा--'महासभा का जन्म पूज्य कालूगणी के युग में हुआ। अनेक आरोह-अवरोह के बीच यह संस्था शताब्दी की संपन्नता की ओर है। तेरापंथ समाज के उत्थान में महासभा ने चिंतन ही नहीं किया, चिंतन को क्रियान्वित करने का भी प्रयास किया है। तेरापंथ समाज का कहीं प्रतिनिधित्व करना हो तो महासभा को प्रस्तुत किया जा सकता है। इस दृष्टि से यह अद्वितीय व अधिकारी संस्था है।' महासभा से संपृक्त कार्यकर्ताओं के विनय, समर्पण व जागरूकता की सराहना करते हुए पूज्य आचार्यप्रवर ने कहा--'ये संस्कार कार्यकर्ताओं में न हों तो वे महासभा से कैसे जुड़े रह सकते हैं? कार्यकर्ताओं में अर्हता होनी चाहिए, निष्ठा का भाव, आचार का स्तर उच्च व व्यवहार समुन्नत होना चाहिए। ऐसा होने से संपदा स्वयमेव आ सकती है। कार्यकर्ताओं में आवेश व अहंकार का प्राबल्य न हो, नशे की आदत न हो, प्रामाणिकता व पारदृश्यता में कमी न हो। कार्यकर्ताओं में शासन व शासनपति के प्रति आस्था का भाव हो। ऐसे कार्यकर्ता संस्था के सौभाग्य होते हैं। महासभा के प्रारंभिक समय के तो कोई साक्षी आज इस परिषद में नहीं हैं। कितने-कितने कार्यकर्ताओं ने महासभा के लिए अपने समय, श्रम व शक्ति का नियोजन किया है।'

आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी वर्ष की चर्चा करते हुए आचार्यवर ने कहा--'इसका निर्णय आचार्यश्री महाप्रज्ञ की सन्निधि में लाडनूं में हुआ था। आचार्य महाप्रज्ञ ने अनुग्रह, उपकार, महर व कृपा-वृष्टि करते हुए शताब्दी वर्ष के आयोजन का समग्र दायित्व महासभा को प्रदान किया। आचार्य तुलसी ने तेरापंथ, जैन समाज व मानव जाति के कल्याण हेतु कितना काम किया। वे बीसवीं शताब्दी के दिव्य पुरुष व समाज सुधारक थे। उनकी शताब्दी का विराट कार्यक्रम सामने है। इसकी समग्र आयोजना हेतु बनी कमेटी के प्रमुख महासभा के अध्यक्ष हैं। हीरालालजी मालू कहां-कहां की कितनी यात्राएं कर रहे हैं। अतीत में कार्यकर्ता खूब तपे हैं, खपे हैं और महासभा के काम में अपनी शक्ति लगाई है। वर्तमान में भी कार्यकर्ता अपने श्रम व समय का कितना नियोजन कर रहे हैं। महासभा द्वारा संपादित हो रहे कार्यों की लंबी सूची है। अभी महासभा शताब्दी व इसके आगे आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी है। कार्यकर्ताओं

में यह संकल्प मजबूत बना रहे कि हमें महासभा को आध्यात्मिक दृष्टि से और मजबूत बनाना है। महासभा मां के रूप में समाज को अपनी सेवाएं दे रही है। कार्यकर्ता तो आता है और चला जाता है, पर संस्था चिरस्थायी हो सकती है। महासभा के आध्यात्मिक विकास हेतु कार्यकर्ता सचेष्ट रहें। महासभा अपना खूब आध्यात्मिक विकास करे, स्वस्थ रहे, प्रसन्न रहे व प्रशस्त रहे।'

महासभा के प्रारंभ से लगभग ६७ वर्ष तक कोषाध्यक्ष का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाने वाले श्रीचन्द गणेशदास गधैया परिवार के श्री संपतकुमार गधैया व श्री रतनलाल गधैया इस अवसर पर उपस्थित थे। श्री संपतजी गधैया ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए आचार्यवर के अमृत महोत्सव का एक कार्यक्रम सरदारशहर में मनाने का आग्रह किया। आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'वैसे मुझे पचास वर्ष पूरे हो गए हैं। फिर भी आप जैसा चाहें, वैसा कार्यक्रम रख सकते हैं।'

जैन भारती का अहिंसा विशेषांक महासभा के अध्यक्ष, महामंत्री, प्रधान न्यासी एवं संपादक श्री शुभू पटवा ने आचार्यवर को भेंट किया। दक्षिण कोलकाता सभा, अमृतम मीडिया एंण्ड पब्लिसिटी एवं उत्कट बिल्डर्स (भुवनेश्वर) के द्वारा महासभा शताब्दी वर्ष के संदर्भ में ग्यारह-ग्यारह लाख के चैक महासभा को प्रदान किए गए। दिल्ली सभा द्वारा भी प्रदान किए जाने की घोषणा हुई। कार्यक्रम का संचालन महासभा के कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र बोरड़ ने किया।

'आचार्य तुलसी प्राकृत पुरस्कार-२०१०' समर्पित

आज मध्याह्न में जैनागम एवं प्राकृत भाषा तथा साहित्य के विकास एवं उसके संवर्द्धन में विशेष योगदान के परिप्रेक्ष्य में डा. छगनलाल शास्त्री (सरदारशहर) को पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में 'आचार्य तुलसी प्राकृत पुरस्कार-२०१०' प्रदान किया गया। जैविभा द्वारा संचालित एवं केबीडी फाउण्डेशन कोलकाता द्वारा प्रायोजित इस पुरस्कार के अंतर्गत प्रशस्ति पत्र, मोमेंटो एवं एक लाख रुपये की राशि का चैक जैविभा अध्यक्ष श्री ताराचन्द रामपुरिया, श्री कमल दूगड़, श्री तुलसी दूगड़, श्री विनोद बैद व श्री सुरेन्द्र बोरड़ ने श्री शास्त्री को भेंट किया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए जैविभा के मंत्री श्री बंशीलाल बैद ने पुरस्कार संचालक, प्रायोजक व प्राप्तकर्ता का परिचय प्रस्तुत किया। संयुक्त मंत्री श्री जीवनमल मालू ने प्रशस्ति पत्र का वाचन किया। श्री शास्त्री ने अपने स्वीकृति भाषण में आभार ज्ञापित किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'श्री छगनलालजी शास्त्री एक विद्वान व्यक्ति हैं। ये आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ के काफी संपर्क में रहे हैं। शास्त्रीजी खूब आध्यात्मिक साधना करते रहें।

श्रुत की भक्ति में निहित है जिनेश्वर देव की आराधना

२६ अक्टूबर। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने कहा--'सुख की प्राप्ति के लिए व्यक्ति को सुख का रास्ता चुनना होगा। व्यक्ति जो भी क्रिया करे, वह ज्ञानपूर्वक करे। ज्ञान प्राप्ति की दिशा में सभी सलक्ष्य प्रयास करें। जिसके पास ज्ञान होता है, उसके भटकने की संभावना नगण्य रहती है। ज्ञानयुक्त उपासना व साधना से व्यक्ति मोक्ष के राजपथ को प्राप्त कर सकता है।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'सम्यक् पथ पर स्थित होने के लिए अध्यात्म विद्या का ज्ञान अपेक्षित है। व्यक्ति यह सोचे कि मुझे श्रुत की प्राप्ति हो और श्रुत के द्वारा मैं एकाग्रचित्त बनूं। अध्ययन के समय चित्त की एकाग्रता बनी रहनी चाहिए। उस समय आकुल-व्याकुल नहीं बनना चाहिए। जिसके पास अध्यात्म विद्या का ज्ञान है, उसका चित्त प्रशान्त रह सकेगा। ज्ञान प्राप्ति के बाद वह स्वयं को सन्मार्ग पर सुस्थिर कर सकता है। उसका चिन्तन होना चाहिए--मैं स्वयं

सन्मार्ग पर स्थित होकर दूसरों को भी इस मार्ग पर लाने का प्रयास करूं।' आचार्यवर ने आगे कहा--'ज्ञान व स्वाध्याय के अभ्यास में हम अपने समय का अधिकतम नियोजन करें। जो श्रुत की भक्ति करते हैं, वे जिनेश्वर देव की आराधना करते हैं। अज्ञान को अंधकार और कष्टदायी माना गया है। यह क्रोध, अहंकार आदि पापों से भी अधिक कष्टकर है। प्रवचन श्रवण से भी ज्ञान की अभिवृद्धि हो सकती है। कंठस्थ ज्ञान की अनुप्रेक्षा करनी चाहिए। आगम व तत्सदृश ग्रंथों का स्वाध्याय करके हम आत्मकल्याण की दिशा में प्रस्थित हों। ज्ञान के साथ हमारा आचार भी सम्यक् होना चाहिए।'

सिलीगुड़ी से समागत डेढ़ सौ व्यक्तियों के संघ की ओर से वहां की सभा के अध्यक्ष श्री नवरत्न पारख ने अपने विचार व्यक्त किए और वहां चातुर्मासिक प्रवास कर रही साध्वी निर्वाणश्रीजी की प्रेरणा से भरे गए बारहव्रत धारण करने वालों के ५५१ संकल्पपत्र आचार्यवर को भेंट किए। नेपाल-बिहार तेरापंथी सभा के एक सौ पचीस प्रतिनिधियों की ओर से अध्यक्ष श्री अनूपकुमार बोथरा ने अपने विचार रखे। बिहार राज्य को पूज्यप्रवर द्वारा एक मर्यादा महोत्सव प्रदान करने की घोषणा के अन्तर्गत स्थान निर्धारण हेतु फारबिसगंज क्षेत्र की ओर से अध्यक्ष श्री पवन बोथरा व आलोक दूगड़ ने अपनी प्रार्थना प्रस्तुत की। छापर की ओर से श्री बंशीलाल बैद ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि हिमांशुकुमारजी ने किया।

प्रत्येक क्रिया में विवेक का परिचय दें

३० अक्टूबर। प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'भारतीय विचारधारा में कर्मवाद भी एक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है। कर्मवाद की अवधारणा के अनुसार व्यक्ति अपने कर्मानुसार फल भोगता है। कर्म भी व्यक्ति का स्वकृत होता है। पूर्व कृत पुण्य-पाप के आधार पर सुख-दुःख प्राप्त होते हैं। पुण्य का बंध भी बंधन है। मोक्ष की दृष्टि से तो वह भी त्याज्य है। किन्तु भौतिक व सांसारिक दृष्टि से पुण्य का महत्त्व है। जैन कर्मवाद के अनुसार चार कर्म नितान्त पाप हैं। जबकि चार कर्म पाप के साथ पुण्य भी होते हैं। सातवेदनीय के बंध से व्यक्ति स्वस्थता का अनुभव करता है। शुभ नामकर्म के बंध से शारीरिक सौष्ठव, मधुर व आदेय वाणी प्राप्त होती है। उच्च गोत्र के बंध से जाति, बल, रूप आदि में अनुकूलता मिलती है।

पुण्य का योग होने पर व्यक्ति संयम रखे। वह अधिक से अधिक संयम की राह पर चले और संयम के साथ कार्य का संपादन करे। यदि विवेक न हो तो धन-संपत्ति और सत्ता व्यक्ति में उन्माद पैदा कर सकते हैं और व्यक्ति को अनर्थ की ओर उन्मुख कर सकते हैं। अविवेक को महा अनर्थकारी बताया गया है। व्यक्ति यदि अपनी प्रत्येक क्रिया में विवेक का परिचय दे तो पुण्य का योग होने पर भी वह स्वयं को पापों से बचा सकता है।'

ज्ञानशालाओं की प्रस्तुति

इन दिनों कई क्षेत्रों से ज्ञानशाला से संबद्ध संघ पूज्यचरणों में पहुंचे। कर्नाटक के मलनाड क्षेत्र से चिकमगलूर, हासन, शिमोगा आदि छह क्षेत्रों से एक सौ साठ ज्ञानार्थी एवं प्रशिक्षक गुरुदर्शन हेतु जसोल पहुंचे और अपनी प्रस्तुति दी। बेंगलुरु ज्ञानशाला से सौ विद्यार्थियों सहित लगभग सवा सौ लोग गुरु उपासना में पहुंचे। उन्होंने कई आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। तेरापंथी सभा दिल्ली के तत्त्वावधान में चल रही दस ज्ञानशालाओं से संबद्ध लगभग बानबे प्रशिक्षकों एवं कार्यकर्ताओं ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। सबको उपासना का अवसर प्राप्त हुआ।

स्मृति-संबल

- श्रीडूंगरगढ़ निवासी श्रीमती रतनीदेवी बोथरा का अठारह दिनों के चौविहार संथारे में स्वर्गवास हो गया। उनके मन में देव, गुरु, धर्म के प्रति गहरा श्रद्धाभाव था।
- पहुना निवासी चेन्नई प्रवासी श्रीमती उगमदेवी चींपड़ (धर्मपत्नी-स्व. हीरालालजी चींपड़) का १०१ वर्ष की सुदीर्घ अवस्था में चौविहार संथारे में स्वर्गवास हो गया। तपस्या के सत्रहवें दिन पूज्यप्रवर के निर्देशानुसार तत्र प्रवासित साध्वी संगीतश्रीजी ने उन्हें संथारे का प्रत्याख्यान करवाया। विगत सत्तर वर्षों से उन्हें रात्रि भोजन, सचित्त का परित्याग व अन्य कई प्रत्याख्यान किए हुए थे। प्रतिदिन चार सामायिक का उनका नियम था। पहुना की उनकी हवेली में साधु-साध्वियों के चतुर्मास होते थे। बाद में उन्होंने वह हवेली समाज को समर्पित कर दी। वे धर्मनिष्ठ, श्रद्धाशील व क्रियाशील श्राविका थीं। अपने दत्तक पुत्र मुकेश रांका के घर पर उन्होंने अन्तिम सांस ली।
- आमली निवासी, अहमदाबाद प्रवासी श्रीमती प्रमिलादेवी चपलोत (धर्मपत्नी-श्री शंकरलाल चपलोत) का देहान्त हो गया। वह धर्मनिष्ठ श्राविका थीं।
- मेहकर (महाराष्ट्र) निवासी श्री मदनलाल नाहर का तैंयासी वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। मरणोपरान्त उनकी पार्थिव देह का दान किया गया। वे नियमित रूप से सामायिक करने वाले श्रावक थे।
- उदासर-बीकानेर निवासी श्री गणेशमल चोरड़िया (सुपुत्र-श्री गिरधारीमलजी चोरड़िया) का छह दिन के तिविहार व एक दिन के चौविहार अनशन में स्वर्गवास हो गया। वे धर्मनिष्ठ श्रावक थे।
- गंगाशहर निवासी श्रीमती भीखीदेवी रांका (धर्मपत्नी-स्व.किशनलालजी रांका) का निधन हो गया। लगभग पांच सौ व्यक्तियों के विशाल समूह के साथ पारिवारिक जनों ने गुरुदर्शन किए। भीखीदेवी साध्वी जिनबालाजी की संसारपक्षीया माता व साध्वी करुणाप्रभाजी की दादीजी थीं। श्रीमती रांका श्रद्धाशील श्राविका थीं।
- रीछेड़ निवासी श्रीमती गणेशीदेवी कोठारी (धर्मपत्नी-स्व.चुन्नीलालजी कोठारी) का पंचानबे वर्ष की अवस्था में देहान्त हो गया। जप, सामायिक आदि का उनका नित्यक्रम था। वे सेवाभावी और मिलनसार श्राविका थीं। उनके पति तत्वज्ञ श्रावक चुन्नीलालजी ने अपने जीवन में बयालीस अठाइयां की थीं।
- छोटीखाटू निवासी श्री गणेशचन्द भंडारी का देहावसान हो गया। उनकी बचपन से ही धर्म के प्रति रुचि रही। तीस वर्ष तक अलीगढ़ (उ.प्र.) के पास सिकन्दराराऊ में व्यवसाय किया। उधर आने वाले साधु-साध्वियों की वे निष्ठा से सेवा करते थे। उनकी व्यावसायिक प्रामाणिकता से सब प्रभावित थे। बारहव्रती व रात्रि भोजन का परिहार रखने वाले भंडारीजी नियमित सामायिक करते और यथावसर केन्द्र की उपासना का लाभ भी लेते थे। उपासक प्रवक्ता ताराचन्दजी उनके अनुज थे।
- चारभुजा निवासी मुम्बई प्रवासी श्रीमती सोसरदेवी सिंघवी (धर्मपत्नी-श्री मीठालाल सिंघवी) का देहान्त हो गया। उनका पूरा परिवार धार्मिक है।
- छापर निवासी दिल्ली प्रवासी श्री मोतीलाल कोठारी का निधन हो गया। तेरापंथ धर्मसंघ के अष्टमाचार्य पूज्य कालूगणी के कोठारी कुल से संबद्ध मोतीलालजी के संसारपक्षीय अग्रज मुनि कन्हैयालालजी व भगिनी साध्वी लिछमाजी ने धर्मसंघ में साधना की। गुवाहाटी चेम्बर ऑफ कॉमर्स के वे वर्षों तक अध्यक्ष रहे तथा वहां के तेरापंथ भवन के निर्माण में भी अपना योगदान दिया। मेसर्स माणकचन्द मोतीलाल फर्म से प्रसिद्ध मोतीलालजी कुशाग्र बुद्धि व कानून के अच्छे जानकार थे।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
Date of Publication : 3-11-2012 L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

- गंगाशहर निवासी श्रीमती वरजीदेवी भूरा (धर्मपत्नी-श्री महालचन्द भूरा) का देहावसान हो गया। वह सरल, धर्मपरायण व श्रद्धाशील श्राविका थीं। प्रतिदिन, सामायिक, जप, संतदर्शन आदि का क्रम था। उन्होंने अठाई, नौ, पन्द्रह आदि कई तपस्याएं की। उनके पति महालचन्दजी व पुत्र अनिल धार्मिक अभिरुचि वाले कार्यकर्ता हैं। वरजीदेवी के निधन के बाद परिजनों ने रूढ़ियों को प्रश्रय न देकर धम्मजागरणा को महत्त्व दिया।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

२१००/- श्री चैनराज-कमलादेवी दरला के दाम्पत्य जीवन की ५०वीं वर्षगांठ (स्वर्णजयंती) के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र महेन्द्रकुमार, पवनकुमार, धनपतकुमार, विकास, सागर, धीमान दरला, आरकोणम (तमिलनाडु) द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्री अशोक-सुमन सुराणा (सरदारशहर) के दाम्पत्य जीवन की २५वीं वर्षगांठ (रजतजयंती) एवं उनकी सुपुत्री शुचिता सह. आशीष के विवाहोपलक्ष्य में श्रीमती केसरदेवी, बालचन्द, कनक, जतन, चैनरूप, अशोक व सौरभ सुराणा, मुम्बई द्वारा प्रदत्त।

२१००/- सुश्री समता जैन (सुपौत्री-कमलादेवी-दानमलजी, सुपुत्री चन्द्रकान्ता-भगवानचन्द बैद, सिरसा) के सी.ए.परीक्षा उत्तीर्ण कर चार्टर्ड एकाउंटेंट बनने के उपलक्ष्य में हीरालाल-मंजु, पूनमचन्द-उषा, गुलाबचन्द-सुनीता, अरविन्द-मोना, तुलसी, प्रियंका, सुरेश निशा बैद द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व.श्री डूंगरमलजी चोरड़िया (सुपुत्र-स्व. घीसूलालजी चोरड़िया, सुजानगढ़-बेंगलुरु) की २१वीं पुण्यतिथि पर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शान्ता, सुपुत्र व पुत्रवधू संजय-शम्मी, संदीप-नीरू, सुपौत्र अरमान व सुपौत्री सिमरन चोरड़िया द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व.श्री जीवराजजी कोठारी (सुपुत्र-स्व. भंवरलालजी-भंवरीदेवी कोठारी, सुजानगढ़-कोलकाता) के प्रभावक संथारे के उपलक्ष्य में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सिरेकंवर, सुपुत्र व पूत्रवधू रतन-अंजू, कनक-संतोष, सुपौत्र धनेश, ऋषभ, कौशल, सुपौत्री रीटा, रिया, हर्षिता, सुष्मिता कोठारी द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती रूपांदेवी डागा (धर्मपत्नी-स्व. चुन्नीलालजी डागा, श्रीडूंगरगढ़) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र श्रद्धानिष्ठ श्रावक इन्द्रचन्द, हंसराज, नेमचन्द, सुपौत्र संतोष, मांगीलाल, ललित, पदम, अशोक, पवन, विनोद, प्रपौत्र सुमित, विक्की, मोन्टी, उमेश, चिन्टू, मोहित डागा द्वारा प्रदत्त।

श्रेणी आरोहण का आदेश

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने जसोल में ५ नवम्बर को समायोज्य दीक्षा समारोह हेतु समणी आरोग्यप्रज्ञाजी को श्रेणी आरोहण का आदेश प्रदान किया है।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता–

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति, पो. जसोल-३४४०२४ जि. बाड़मेर (राजस्थान) फोन : ६६८००५५३८१, ६३५२४०४६४१

दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

●

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**